तृप्ति की वासना तृप्ति-3

“लेखक : संजय शर्मा उर्फ़ संजू सम्पादक एवं प्रेषक : सिद्धार्थ वर्मा कहानी का पहला भाग : तृप्ति की वासना तृप्ति-1 कहानी का दूसरा भाग : तृप्ति की वासना तृप्ति-2 जब मैं... [Continue Reading] ...”

Story By: (svsidhaarth)
Posted: Saturday, January 17th, 2015
Categories: चाची की चुदाई
Online version: तृप्ति की वासना तृप्ति-3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

तृप्ति की वासना तृप्ति-3

लेखक : संजय शर्मा उर्फ़ संजू
सम्पादक एवं प्रेषक : सिद्धार्थ वर्मा

कहानी का पहला भाग : तृप्ति की वासना तृप्ति-1
कहानी का दूसरा भाग : तृप्ति की वासना तृप्ति-2

जब मैं वापिस कमरे में आया तो देखा कि मेरी गुमसुम चाची अपने कपड़े पहन रही थी।

तब मैं उनके होंठों और गालों को चूम कर बैड पर लेट गया।

चाची कपड़े पहन कर पता नहीं क्या सोचती हुए मेरे पास ही बैड पर बैठ गयी और मुझे थकावट के कारण शीघ्र ही मेरी आँख लग गई।

शाम छः बजे जब मेरी आँख खुली और मैं नीचे की मंजिल पर गया तो देखा कि मम्मी आ चुकी थी।

उन्होंने मुझे देखते ही पूछा- अब तबियत कैसी है ?
मैंने उत्तर दिया- पहले से अब तो बेहतर है।

तब माँ ने कहा- बहुत अच्छी बात है कि तुम्हें आराम मिल गया। बैठो, मैं तृप्ति को कहती हूँ, वह तुम्हें यहीं चाय दे देगी।

फिर माँ ने ऊँची आवाज़ में बोली- तृप्ति, मैं नहाने जा रही हूँ। संजू उठ गया है तुम उसको चाय बना कर दे दो।

रसोई में से चाची की आवाज़ आई- अच्छा जीजी…

कुछ देर के बाद चाची चाय का कप ले कर आई और मेरे सामने रख कर जाने लगी तभी मैंने हाथ बढ़ा कर धीरे से उनकी चूचियों को मसल दिया।

वह कुछ भी नहीं बोली और चुपचाप मुड़ कर रसोई में चली गयी तथा अपने काम में व्यस्त हो गई।

चाय पीकर जब मैं रसोई में कप रखने गया तो देखा की चाची बर्तन धो रही थी और उसकी पीठ मेरे ओर थी।

तब मैंने कप देने के बहाने उनकी पीठ से चिपक कर अपने बाजूओं को उनके चारों ओर से आगे करते हुए उन्हें कप पकड़ाया।

उन्होंने जैसे ही मेरे हाथ से कप पकड़ा मैंने उनको अपने बाहुपाश में ले लिया और उनकी दोनों चूचियों को पकड़ कर जोर से मसल दिया।

चाची दर्द के मारे आह्ह… आह्ह… कर उठी और बोली- संजू, क्या कर रहे हो, मुझे भी दर्द होती है। इतनी जोर से मसलने के बदले अगर थोड़ा आराम से सहलाते तो दोनों को ही आनन्द मिलता।

चाची की बात सुन कर मैंने बहुत ही आराम से कुछ देर उनकी चूचियों को सहलाया और फिर उनके होंठों को चूम कर अपने कमरे में चला गया।

अगले दो दिन शनिवार और रविवार थे और पापा मम्मी घर पर ही रहते थे इसलिए मुझे चाची के साथ कुछ करने के लिए कोई मौका ही नहीं मिला।

क्योंकि सोमवार सुबह तो मुझे कोई मौका नहीं मिलने वाला था इसलिए मैं कॉलेज चला

गया और आशा थी कि शाम को थोड़ा जल्दी घर आऊँगा तो अवश्य ही मौका मिल जायेगा।

लेकिन शाम को जब मैं कॉलेज से घर आया तो बहुत मायूस होना पड़ा क्योंकि छोटे भाई की कोचिंग समाप्त हो चुकी थी और वह घर पर ही तथा पूरी शाम मुझे अपने कमरे में ही रहना पड़ा।

इसी तरह बृहस्पतिवार तक यानि चार दिन छोटे भाई के घर पर ही होने के कारण मैं चाची के साथ कुछ अधिक नहीं कर सका लेकिन जब भी मौका मिलता था मैं उनकी चूचियों और गालों को ज़रूर मसल देता था।

शुक्रवार सुबह जब मैं नाश्ता कर रहा था, तब मम्मी ने बताया कि उसी दोपहर को वह, पापा और छोटा भाई उसके एयर फ़ोर्स में प्रवेश के सिलसिले में बाहर जा रहे थे और रविवार रात तक ही वापिस आयेंगे।

नाश्ता करके जब मैं बर्तन रखने के लिए रसोई में गया तब चाची को बहुत खुश देखा तब मैंने उनके पास जाकर धीरे से उनकी चूचियों को मसलते हुए उनकी खुशी का कारण पूछा लेकिन वह कुछ नहीं बोली और चुपचाप अपने काम में लगी रही।

उस दिन मैं कॉलेज से दोपहर दो बजे ही लौट आया तो देखा कि चाची ने फिरोजी रंग की साड़ी पहन रखी थी, हल्का सा मेक-अप भी कर रखा था।

मुझे देखते ही चाची बोली- आ गए संजू। चलो जल्दी से हाथ मुंह धो लो, साथ बैठ कर खाना खायेंगे।

उनके बदले हुए रूप को देख कर मैं चकित रह गया क्योंकि जब से मैंने उनकी चुदाई की थी तबसे वह मुझसे बात ही नहीं करती थी।

मैं फ्रेश होकर जब टेबल पर आया और हम दोनों खाना खाने बैठे तब मैंने देखा की सारा खाना मेरी पसंद का ही था।

खाना खाते हुए मैंने चाची से पूछा- मम्मी पापा किस समय गए ?
चाची बोली- वे दोपहर का खाना खाकर एक बजे गए हैं।
मैं बोला- क्या तुम्हें पता था कि वे सब इतने दिनों के लिए बाहर जा रहे हैं ?
चाची बोली- हाँ, जीजी ने रात को ही मुझे अपना सारा कार्यक्रम बता दिया था।
मैं बोला- क्या इसीलिए तुम सुबह खुश थी ?

चाची बोली- हाँ, मुझे खुशी थी कियोंकि मुझे तुम्हारे साथ अकेले रहने के लिए ढाई दिन और दो रातें मिल रहे थे।
मैंने कहा- इन ढाई दिनों के लिए तुम अपने मायके जा कर नितिन के साथ भी बिता सकती थी ?

मेरी व्यंग्य को सुन कर वह बोली- देखो संजू, मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ कि मुझे सेक्स करना बहुत पसंद है लेकिन तुम्हारे चाचा के जाने के बाद मैं उससे वंचित रह गई थी। इसलिए उनके विदेश जाने के बाद जब तीन महीने के लिए मैं अपने मायके रही थी तब मुझे सेक्स के बिना छह माह से अधिक हो चुके थे।
वहाँ मैं अपनी वासना की आग को बर्दाश्त नहीं कर पाई और इसलिए मैंने नितिन को सेक्स के लिए लुभा लिया और उससे चुदाई करवाती रहती थी। मेरे आग्रह पर वह मेरी वासना को शांत करने के लिए सप्ताह में एक दिन यहाँ आ कर मुझे चोद जाता था।

फिर कुछ क्षण रुक कर उसने अपनी बात को जारी रखते हुए वह बोली- लेकिन उस दिन जब तुमने मुझे जबरदस्ती चोदा था तब मुझे तुम्हारा मोटा और सख्त लंड बहुत पसंद आया।
जो आनन्द और संतुष्टि तुमने मुझे उस दिन दी थी वह आज तक ना तो तुम्हारे चाचा और

ना ही नितिन मुझे दे सका था।
पिछले छह दिनों में जब तुम्हें मौका मिलता था, तुम मुझे चूम और मसल कर तड़पता छोड़ जाते थे और मैं अपनी अतृप्त वासना की आग में जल कर रह जाती थी।
तुम्हारे साथ इस घर में इन आने वाले दिनों में अपनी अतृप्त वासना की तृप्ति होने की आशा के कारण मैं खुश थी।
अब मेरा तुम से अनुरोध है कि अगले ढाई दिन और दो रातों में अपनी इच्छा अनुसार मुझे चोद कर मेरी वासना की आग को शांत कर के मुझे तृप्ति प्रदान कर दो।

खाना पूरा होते ही मैंने उठते हुए कहा- तो फिर देर किस बात की है ? चलो, पहली शिफ्ट अभी लगा लेते हैं।

चाची खुश होते हुए बोली- ठीक है, तुम बाहर के दरवाजे की कुण्डी लगा दो, तब तक मैं टेबल साफ़ कर देती हूँ।

मैं फ़टाफ़ट कुंडी लगा कर कमरे में पहुंचा तब तक चाची भी आ गई और मुझसे लिपट कर अपनी बाँहों में जकड़ लिया।

मैंने उनके होंटों पर अपने होंट रखे दिए और हम दोनों धीरे-धीरे एक दूसरे के होंटों तथा जीभ की चूमने एवं चूसने लगे।

दस मिनट के बाद मैंने उनके और उन्होंने मेरे कपड़े उतारने शुरू कर दिए और कुछ ही मिनटों के बाद हम दोनों बिलकुल निर्वस्त्र एक दूसरे से चिपटे हुए थे।

फिर हम दोनों बैड पर 69 की अवस्था में लेट गए और मैं उनकी चूत को खीर की कटोरी समझ कर चाटने लगा तथा वह मेरे लंड को लॉलीपोप की तरह चूसने लगी।

चाची मेरे लंड को चूसती जा रही थी और कहती जा रही थी- मेरे राजा, चूसो जोर से चूसो

मेरी चूत को, खा जाओ इसे।

काफी देर तक ऐसे ही चलता रहा और फिर चाची की चूत ने पानी छोड़ दिया जिसे मैंने चाट लिया तथा मेरे लंड ने भी वीर्य की धार छोड़ दी जिसे चाची बहुत चाव से शहद समझ कर पी गई।

उसके बाद आधे घंटे तक हम दोनों एक दूसरे से चिपके हुए तथा एक दूसरे के गुप्तांगों को मसलते हुए लेटे रहे।

जब हम दोनों फिर से उत्तेजित होने लगे तब हमने 69 की अवस्था में चूत और लंड को चाट एवं चूस कर कुछ ही मिनटों में चुदाई के लिए तैयार हो गए।

तब चाची ने मुझे बैड पर लिटा दिया और मेरे ऊपर चढ़ कर मेरे लंड को पकड़ कर अपनी चूत के मुँह पर लगाया और उस पर बैठ कर उसे पूरा का पूरा अपनी चूत में समां लिया।

इसके बाद वह उछल उछल कर चुदाई करने लगी और जब उसके चूत में हलचल एवं खिंचावट होती तब जोर जोर से सिसकारी भरती और पानी छोड़ देती।

बीस मिनट तक चुदाई करके जब वह थक गई तब नीचे लेट गई और मैं उनके ऊपर चढ़ गया और बहुत ही तेजी से उसकी चुदाई करने लगा।

उस तेज़ चुदाई को दस मिनट ही हुए थे की चाची जोर से चिल्लाई- आईईई ईई… संजू मैं आने वाली हूँ तुम भी जल्दी से आ जाओ! साथ साथ झड़ने में बहुत ही आनन्द आता है और दोनों को पूर्ण संतुष्टि भी मिलेगी।

चाची की बात सुन कर मैं बहुत उत्तेजित हो गया और तेज़ धक्के लगाने लगा तभी मेरा लंड उनकी चूत के अंदर ही फूल गया और उनके साथ मैं भी उनके अन्दर ही झड़ गया।

हम दोनों थक गए थे इसलिए उसी तरह एक दूसरे से लिपटे हुए सो गए और शाम के छह बजे ही उठे!

उन ढाई दिन और दो रातों में हम दोनों ने दसियों बार चुदाई करी!
उसके बाद आज तक हमें जब भी कभी मौका मिलता था हम दोनों अपनी वासना की आग को शांत कर लेते थे।

मेरी रचना पढ़ने के लिए बहुत धन्यवाद।
svsidhaarth@gmail.com